मनोज
कॉमिक्स
मूल्य 7.00
अपने देश का
गद्दार

अपने देश का गद्दार

डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½ राम-रहीम

लेखक: बिमल चटर्जी
चित्र: त्रिशूल कॉमिक्स आर्ट

प्रिय पाठको, आप लोगों ने डबल सीक्रेट एजेंट 00½ राम-रहीम सीरीज की चित्रकथा के पिछले अंकों की जितनी प्रशंसा की, उसके लिए हम आपके आभारी हैं, लेकिन हमें बहुत-से पाठकों के कुछ ऐसे पत्र प्राप्त हुए हैं, जिनमें उन्होंने रहीम के बारे में जानना चाहा है कि वह राम का मुँह बोला भाई कैसे बना, पहले वह कहाँ रहता था और उसके अपने माता-पिता का क्या हुआ? अतः हम आपके इन सभी प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत चित्रकथा के माध्यम से दे रहे हैं। हमें विश्वास है कि आप सब भी रहीम के बारे में जानने के लिए उत्सुक होंगे और इस अंक का स्वागत करेंगे।

प्रस्तुत कहानी उस समय की है, जब बंगला देश आजाद नहीं हुआ था और पाकिस्तान की अन्दरूनी हालत ठीक नहीं चल रही थी। उस समय न राम डबल सीक्रेट सर्विस का एजेंट था और न रहीम। राम अपने माता-पिता के साथ अपने देश हिन्दुस्तान में रहता था और रहीम अपने माता-पिता और बहन के साथ अपने देश पाकिस्तान में। हां, राम-रहीम में उस समय भी गहरी दोस्ती थी। रहीम के पिता मेजर आसिफ अली राम के पिता कर्नल राघव के परिचितों में से थे। राम स्कूल में पढ़ रहा था और खाली समय में अपने पिता से विभिन्न प्रकार के हथियार आदि चलाने की ट्रेनिंग ले रहा था। कर्नल राघव जब भी छुट्टियों में घर आते तो उनका मुख्य काम राम को विभिन्न प्रकार की ट्रेनिंग देना ही होता था। उस ट्रेनिंग में वे राम को घुड़सवारी, ड्राइविंग, जूडो-कराटे, कुश्ती, बॉक्सिंग और निशानेबाजी आदि का प्रशिक्षण देते थे। हम प्रस्तुत कहानी का आरम्भ भी उन्हीं दिनों से कर रहे हैं, जब राम के पिता कर्नल राघव एक बार सीमा से कुछ दिनों की छुट्टियों पर घर लौटे। उनके छोटे-से परिवार में उनकी पत्नी राधादेवी और इकलौते बेटे राम के सिवा और कोई नहीं था।
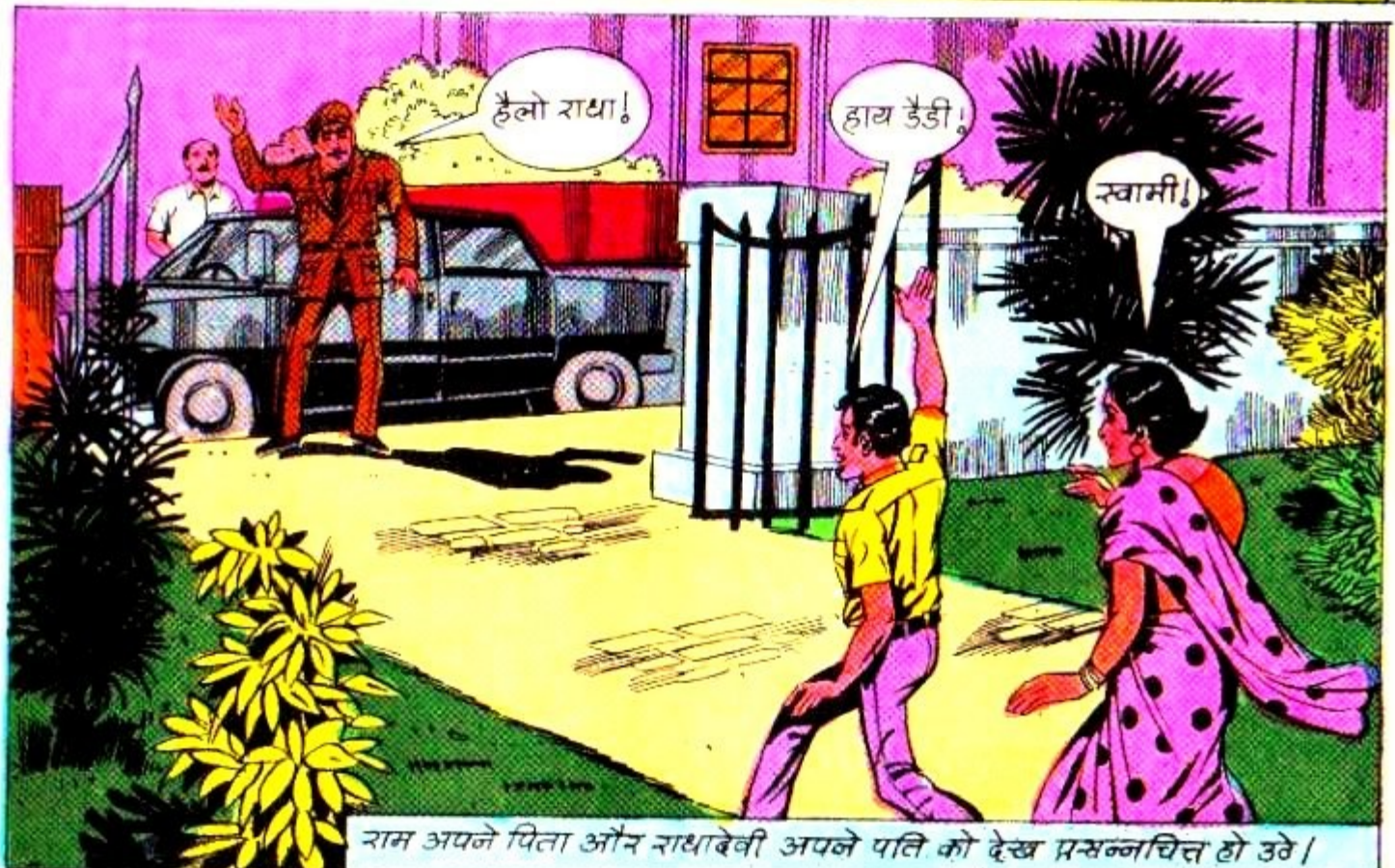
राम अपने पिता और राधादेवी अपने पति को देख प्रसन्नचित्त हो उठे।

बस-बस, रहने दो भई...

...हमेशा सुखी रहो। यह तो बताओ, कैसी हो तुम?
बहुत अच्छी हूं। अब छोड़िये भी! राम क्या सोचेगा?

ओह, राम! उसे तो मैं भूल ही गया था।

और जब राम उनके निकट पहुंचा-
हैलो माई सन, कैसे हो और तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है? अरे हां, मैं तो भूल ही गया। इस बार तुम्हारे रिजल्ट का क्या रहा?

अपनी क्लास में फर्स्ट आया हूं डैडी! और आजकल गर्मियों की छुट्टियां चल रही हैं। अब आप आ गये हैं तो छुट्टियां और भी मजे से कटेंगी।

क्यों नहीं बेटे! मैं भी तो यही चाहता हूं कि इन छुट्टियों में तुम अपनी अधूरी ट्रेनिंग पूरी कर लो।
वाह! आपने तो मेरे मुंह की बात छीन ली डैडी! तो फिर क्यों न आज से ही अधूरा काम शुरू किया जाए!
जरूर!

सुनिए, अब आप यह बातचीत बंद कीजिए और जल्दी से नहा-धो लीजिए। तब तक मैं खाना तैयार करती हूं।
कह तो तुम ठीक रही हो राधा! वास्तव में हमें बहुत जोरों से भूख लगी है।

कुछ देर बाद भोजन की मेज पर—
डैडी! सुना है, आजकल सीमा पर पड़ोसी देश की सैनिक गतिविधियां काफी बढ़ गई हैं। क्या कोई युध्द छिड़ने के आसार हैं?
कुछ कहा नहीं जा सकता बेटे! वैसे हमारे देश के सम्बन्ध आजकल उनसे कुछ अच्छे नहीं चल रहे हैं।

सहसा राधादेवी मन-ही-मन किसी अज्ञात आशंका से भयभीत होती हुई बोलीं—
सुनिये, आप यह नौकरी छोड़ क्यों नहीं देते? मुझे हमेशा डर लगा रहता है। यदि युध्द छिड़ गया तो कहीं...
यह आप कैसी बात कर रही हैं मम्मी! भला युध्द के खतरे से भयभीत होकर एक सैनिक नौकरी छोड़ देगा तो धरती-माँ की रक्षा कौन करेगा?
तुम चुप रहो।

तब कर्नल राघव एकाएक गम्भीर स्वर में बोले—
उसे चुप कराने से कोई फायदा नहीं है राधा। वह ठीक ही कह रहा है। तुम इसीलिये डरती हो न कि मैं किसी भी समय लड़ाई में मारा जा सकता हूं, क्योंकि मैं एक सैनिक हूं। जिसका कर्तव्य है हंसते-हंसते अपने देश की रक्षा के लिये मौत का आलिंगन करना।
जी हां, इसीलिए मैं चाहती हूं कि आप यह नौकरी छोड़ दें।

तब मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो राधा। मान लो, आज मैं यह सैनिक नौकरी छोड़ देता हूं तो क्या मैं कभी नहीं मरूंगा? क्या तुम हमेशा सुहागिन बनी रहोगी?
ज...जी... यह आप कैसी बातें कर रहे हैं? मैं कुछ समझी नहीं।

लेकिन कर्नल राघव अपनी ही भावनाओं में बोलते चले आ रहे थे।

राधादेवी की आँखें मानो खुल गईं।

राधा की बात सुनकर कर्नल राघव का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा, जबकि राम की आँखों में खुशी के आँसू भर आये।
शाबाश राधा! आज मैं बहुत खुश हूँ। जिस सैनिक की पत्नी या माँ तुम जैसी औरत होगी, उसके देश और धरती-माँ की ओर कोई दुश्मन आँख उठाकर भी देखने का साहस नहीं करेगा।
यू आर ग्रेट मम्मी!
महान मैं नहीं हूँ बेटे, तुम्हारे पिता हैं, जिन्होंने आज मेरी आँखें खोल दी हैं।

तभी कर्नल राघव ने हंसते हुए बात का रुख पलटा।
अरे भाई, अब ये बातें ही होती रहेंगी या भोजन भी होगा। देखो न, सारा खाना ठंडा हो गया।
ओह! ठहरिये, मैं अभी गर्म करके लाती हूँ।
रहने दीजिये मम्मी! आज ठंडा खाना भी बहुत स्वादिष्ट लगेगा।
और फिर तीनों ही हंसते हुए भोजन की प्लेटों पर तेजी से हाथ साफ करने में जुट गये।

कर्नल राघव अपने बेटे राम को भी देश का एक बहादुर सिपाही बनाना चाहते थे, ताकि वह भी आगे चलकर अपने देश का, अपनी मातृ-भूमि भारत का एक सशक्त प्रहरी बन सके। अतः उसी दिन शाम से उन्होंने राम को फिर से विशेष ट्रेनिंग देनी आरम्भ कर दी।
वे राम को तरह-तरह की ट्रेनिंग में पिस्तौल चलाना, घुड़सवारी करना, ड्राइविंग करना व बॉक्सिंग और अन्य प्रकार का प्रशिक्षण दिया करते थे।

राम भी बचपन से ही अपने पिता द्वारा दी गई हर प्रकार की शिक्षा को मन लगाकर सीख रहा था, जबकि राधादेवी कभी-कभी राम को दी जानेवाली ट्रेनिंग से घबरा उठती थीं।
क्या राम को इतनी छोटी उम्र में यह सबकुछ सिखाना उचित है? यदि उसे कुछ हो गया तो...?

तभी—
नहीं, गोली मत चलना।
मम्मी!
ओह, राधा!

क्या बात है राधा? तुम क्यों यहां चली आईं?
यह आप उस मूर्ख को निशानेबाजी सिखा रहे हैं या आत्महत्या कर रहे हैं? कहीं गोली आपको लग गई तो?
कहने के साथ ही राधादेवी की आंखों से झर-झर आंसू बहने लगे।

अरे! तुम तो वास्तव में घबरा गईं। भई, तुम्हारे राम का निशाना इतना कमजोर तो है नहीं कि फल की जगह मेरी खोपड़ी उड़ जाए! मुझे उसके निशाने पर पूरा भरोसा है। जरा तुम भी अपनी आंखों से देखो।
हां मम्मी! आप नाहक ही डर रही हैं। गोली फल को ही लगेगी विश्वास रखिये।

राम की बात सुन राधादेवी एकदम क्रोध से बिफर उठीं।
तुम दोनों बाप-बेटे पागल हो गये हो। क्या और किसी तरह निशाना नहीं लिया जा सकता? जरूरी है कि तुम्हारे पिता फल को सिर पर रखकर खड़े हों और तुम उसका निशाना लगाओ। मैं कहती हूं, बन्द करो यह भयानक खेल।

राधा! तुम वास्तव में बहुत डरपोक हो। एक सैनिक की पत्नी होकर ऐसी बातें करती हो!
हां-हां, मैं डरपोक हूं। चाहे जो कहिये, लेकिन मैं राम को ऐसा निशाना कभी नहीं लगाने दूंगी।
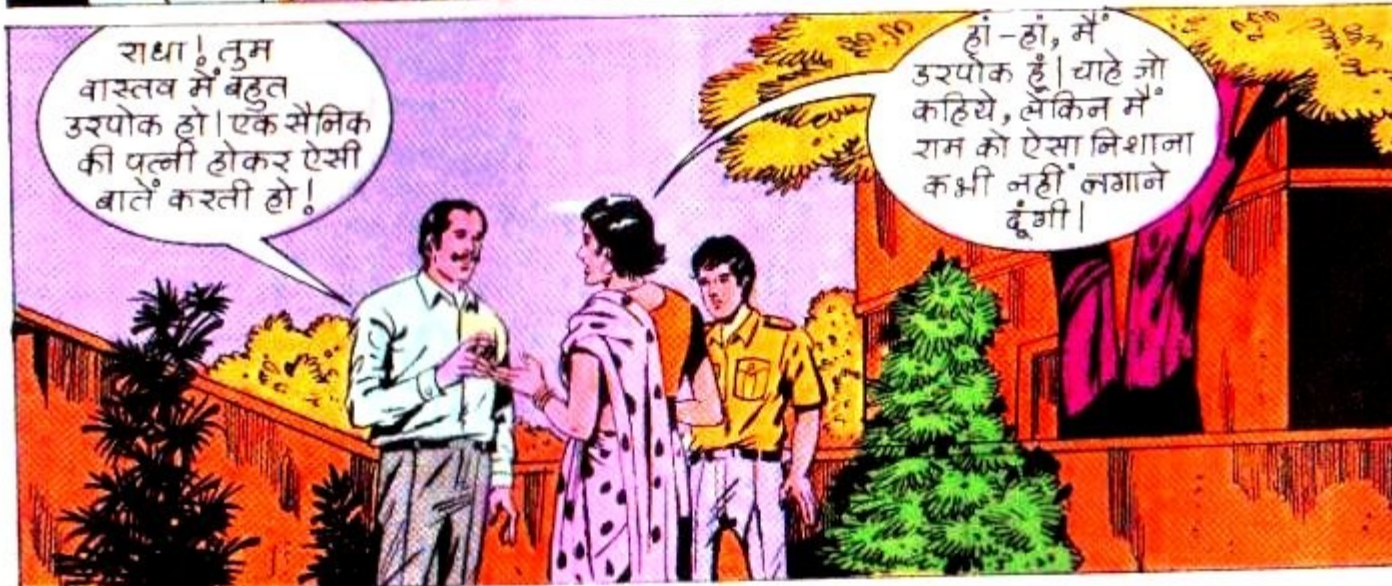
कर्नल राघव भी काफी ज़िद्दी स्वभाव के थे। अतः वे झुंझला उठे—
देखो राधा, राम को निशाना लगाने दो। आज उसकी निशानेबाजी की अंतिम परीक्षा है! यदि वह यह निशाना लगाने में सफल हो गया तो समझ लो, वह दुनिया के बेहतरीन निशानेबाजों में से एक होगा।
मैं कुछ नहीं जानती। मैं आपको हरगिज़ ऐसा नहीं करने दूंगी।

राधादेवी की ज़िद देखकर कर्नल राघव ने मायूस-सी दृष्टि से राम की ओर देखा। राम ने फौरन कोई इशारा किया—

इशारे का अर्थ समझ कर्नल राघव राधादेवी को एक तरफ कर पुनः अपने सिर पर फल को रखते हुए बोले—
अच्छा राधा, जब तुम नहीं मानतीं तो रहने दो। अच्छा, बताओ तो, मेरे सिर पर रखा फल कौनसा है?

डैडी मम्मी को उलझाए हुए हैं। मैं निशाना साधूं।

इस समय स्थिति यह थी कि फल कर्नल राघव के सर पर रखा था और राम उसका साफ निशाना ले सकता था। राधादेवी कर्नल राघव से कुछ दूरी पर खड़ी थीं।
किस सोच में हो राधा! बताओ न, मेरे सिर पर रखे फल का क्या नाम है?
स...सेब।

ओ. के. डैडी! तो उछालिये इस सिक्के को हवा में!
रेडी!
यस डैडी!

कर्नल राघव ने वह सिक्का हवा में ऊपर उछाला और राम ने तुरन्त उस पर फायर झोंक मारा।
धांय
शाबाश बेटे!
वाह!

डैडी! अब अन्तिम परीक्षा कौन-सी है?
अब मैं एक सिक्के के स्थान पांच सिक्के उछालूंगा। तुम्हें एक साथ उनका निशाना लेना होगा...

...यदि तुमने पांचों का निशाना एक साथ उनके धरती पर गिरने से पहले लिया तो अपने-आपको अव्वल नम्बर का निशानेबाज समझना, वरना तुम द्वितीय श्रेणी में गिने जाओगे।
डैडी, मुझे अपने निशाने पर पूरा विश्वास है। आप सिक्के उछालिये।
गुड!

तब कर्नल राघव ने अपनी जेब से पांच पैसे के पांच सिक्के निकाले—
आर यू रेडी?
यस डैडी!
???

तुरन्त कर्नल राघव पाँचों सिक्के हवा में उछालते हुए चीख उठे—
तो फिर शुरू हो जाओ।

राम बिजली की-सी फुर्ती के साथ हरकत में आया—
कड़ाक्
धांय

धांय

धांय

धांय

धांय

उसकी इस कामयाबी पर कर्नल राघव ने दौड़कर राम को गले से लगा लिया।
शाबाश मेरे बेटे! मुझे तुम पर गर्व है। वास्तव में तुम्हारा निशाना काफी अच्छा है। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि तुम मुझसे भी बढ़कर निशाने-बाज हो। तुम बड़े होकर अवश्य देश का नाम रोशन करोगे।
थैंक्यू डैडी!
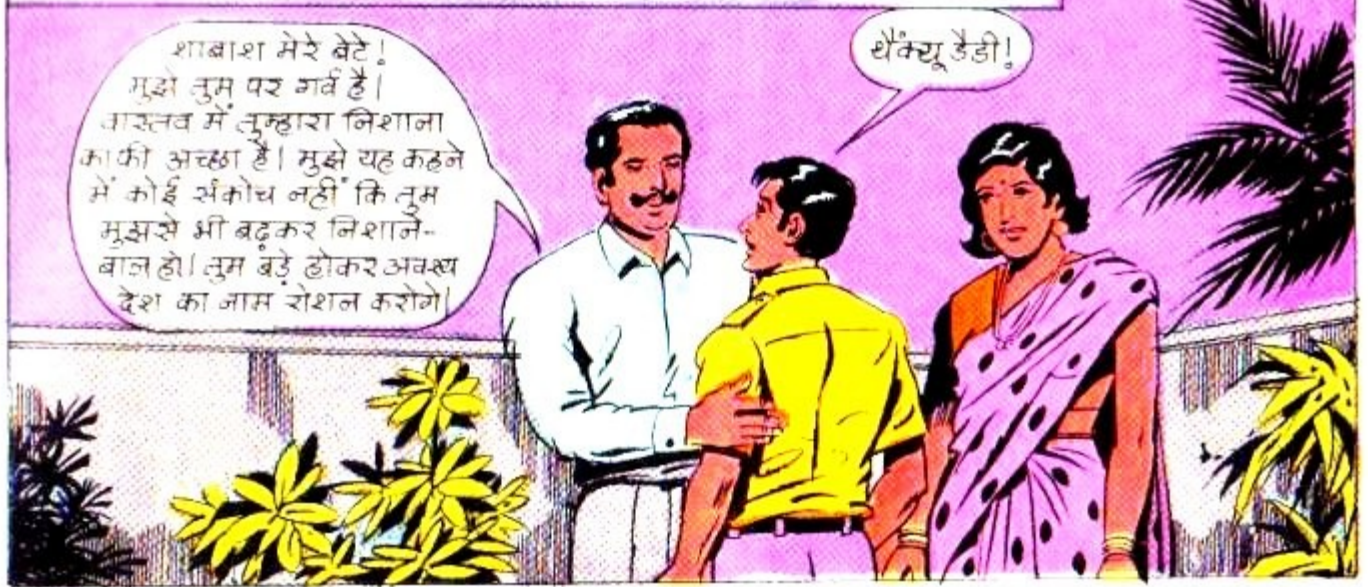
फिर कर्नल राघव अपनी पत्नी की ओर मुड़कर प्रसन्नता-भरे स्वर में बोले-
क्यों राधा, अब तो तुम्हें अपने बेटे की निशानेबाजी पर विश्वास हो गया होगा? देखा, कितना सच्चा निशाना लगाता है।

आखिर बेटा भी तो आपका ही है। फिर आप जैसा क्यों न होगा?
हां, अब की है तुमने समझदारी की बात, लेकिन यह मत समझ लेना कि राम सिर्फ निशानेबाजी में ही माहिर है। अभी तुमने राम के बॉक्सिंग व जूडो-कराटे के दांव-पेच नहीं देखे। इसका एक ही वार विरोधी को नॉकआउट करने के लिए काफी होगा। लड़ाई व कुश्ती के भी मैंने इसे ऐसे-ऐसे दांव सिखाए हैं कि यदि तुम देख लो तो दांतों तले उंगली दबा लो।

चलिये, मुझे विश्वास हो गया। अब चलकर आप दोनों खाना खा लीजिये।
वाह! खूब याद दिलाई तुमने खाने की। वास्तव में जोरों की भूख लगी है। चलो बेटे राम, आज हम दोनों तुम्हारे इस परीक्षा में पास होने की खुशी में डटकर भोजन करेंगे।
बिल्कुल डैडी, चलिये।

फिर तीनों कोठी में प्रविष्ट हो डाइनिंग रूम में पहुंचकर खाना खाने लगे।
वाह! क्या सब्जी है।
और मेरे प्रिय आलू के परांठे भी।

आज राम का जन्मदिन है ना, इसलिए विशेष रूप से मैंने आप दोनों के लिये यह भोजन अपने हाथ से तैयार किया है।
अरे, पहले क्यों नहीं बताया?

हैप्पी बर्थ-डे टू यू माई सन!
मेरी ओर से भी हैप्पी बर्थ-डे टू यू बेटे!
थैंक्यू मम्मी! थैंक्यू डैडी!
फिर तीनों प्रसन्नता से भोजन करने लगे।

सर्व प्रथम भोजन कर उठने वालों में थे कर्नल राघव, लेकिन जैसे ही वे मेज से उठे, कॉल बेल बज उठी।
ट्रन-ट्रन-ट्रन!
तुम लोग भोजन करो, मैं देखता हूं!

द्वार खोलने पर –
आपका रजिस्टर्ड लेटर है सर! कृपया इस कागज पर दस्तखत कर दीजिये।
ठीक है। जरा पैन दो।

कर्नल राघव ने पत्र लेकर कागज पर दस्तखत किये और डाकिये को विदा कर दरवाजा बन्द कर दिया।
आहा! पत्र पाकिस्तान से आया है और मेरे मित्र मेजर आसिफ का है!

लेकिन इतने दिनों बाद आज अचानक उसका पत्र? ऐसी क्या खास बात हो सकती है?

कर्नल राघव लिफाफे से पत्र निकालकर पढ़ने लगे।

तभी राम वहां पहुंच गया।
किसका पत्र है डैडी ?
मेरे मित्र मेजर आसिफ का।

मेजर आसिफ! कौन हैं ये डैडी ? यह नाम तो मैं पहली बार सुन रहा हूँ।

अरे, भूल गये! ये वही मेजर हैं, जो पाकिस्तानी फोर्स में एक उच्चाधिकारी हैं। जिनसे एक बार मैंने तुम्हें भारत में ही एक पार्टी में मिलवाया था...

...और हां, इनका एक लड़का भी है - रहीम! जिससे बाद में तुम्हारी अच्छी-खासी दोस्ती हो गई थी।
ओ हां! याद आया। तो यह पत्र मेरे दोस्त रहीम के पिता का है! क्या लिखा है उन्होंने डैडी! वे सब ठीक तो हैं ना ?

सब ठीक हैं! बाकी खुद ही पढ़ लो।

राम ने पत्र पढ़ा तो उसका चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा।
आहा! डैडी, अगले शनिवार को रहीम की बड़ी बहन की शादी है और उन्होंने हम सबको बार-बार इस खुशी के मौके पर आने के लिये लिखा है।
हां!

तो फिर क्या हम सब जायेंगे डैडी! मैं अपनी तैयारी कर लूं ?
नहीं भई, हम उनकी शादी में शामिल नहीं हो पायेंगे। मजबूरी है, मेरी छुट्टियां खत्म होने वाली हैं और मुझे ड्यूटी पर वापस लौटना है।
ओह!

डैडी, क्या आप मुझे जाने देंगे? मुझे रहीम से मिले काफी अर्सा हो चुका है। फिर पाकिस्तान घूमने की भी मेरी काफी वर्षों से इच्छा है। इस बहाने मैं वहां घूम भी आऊंगा।
राम की बात सुनकर एका एक कर्नल राघव गम्भीर हो उठे।

तभी--
क्या बात है जी? किस गम्भीर चिन्ता में डूबे हैं?

अरे, यह राम के हाथ में पत्र कैसा?
यह मेरे दोस्त रहीम का पत्र है मम्मी! उसने हमें अपने देश पाकिस्तान अपनी बहन की शादी में बुलाया है।

हां राधा, और यह वहां जाने के लिये मुझसे इजाजत मांग रहा है।
नहीं, यह असम्भव है। राम को मैं एक क्षण के लिये भी अपनी आंखों से दूर नहीं कर सकती...

...फिर आप ही तो बता रहे थे कि वहां की अन्दरूनी हालत ठीक नहीं है। किसी भी समय गृह-युद्ध छिड़ सकता है। यही नहीं, बल्कि हमारे देश के साथ भी उसके तनावपूर्ण सम्बन्ध चल रहे हैं।
हां, इसी लिये तो मैं सोच में पड़ गया था!

इसमें सोचने की क्या बात है? ऐसी परिस्थितियों में भला हम कैसे इसे वहां भेज सकते हैं?
प्लीज मम्मी! ऐसा न कहिए। काफी अर्से बाद तो यह एक मौका मिला है अपने दोस्त से मिलने का।

हरगिज नहीं। ऐसे हालातों में हम तुम्हें वहां नहीं भेज सकते। जाओ, जाकर अपना काम करो।
अच्छा मम्मी!

लगता है, राम का दिल टूट गया है। आज की परीक्षा में पास होने का इनाम उसे कुछ देना ही होगा मुझे।

इसी तरह दो दिन गुजर गये, लेकिन राम के होंठों पर मुस्कान नहीं दिखाई दी। तीसरे दिन जब राम दोपहर को खाने की मेज पर पहुंचा–
क्या बात है राम, तुम कुछ उदास-से नजर आ रहे हो? तबीयत तो ठीक है ना?

म...मैं बिल्कुल ठीक हूं डैडी! भला मेरी तबीयत को क्या होगा?
नहीं बेटे, तुम हमारी नजरों को धोखा नहीं दे सकते। हम देख रहे हैं कि तुम उसी दिन से उदास हो, जिस दिन तुम्हारे मित्र रहीम का पत्र आया था। और तुम्हें उसके यहां जाने से रोका गया था।

राम से कुछ कहते नहीं बना तो उसने चुपचाप अपना सिर झुका लिया। कर्नल राघव ने एक बार अपने लाड़ले बेटे की ओर देखा, फिर दाईं जेब में दायां हाथ डालकर उन्होंने कुछ कागजात निकाले और मुस्कराते हुए बोले–
अच्छा बेटे, अपनी उदासी का कारण नहीं बताना चाहते तो मत बताओ, लेकिन यह तो देखो, हम तुम्हारे लिये क्या लाये हैं।

राम ने चौंककर तुरन्त सिर उठाया, फिर अपने पिता के हाथों में दबे कागजातों को देखकर चकित स्वर में बोला—
यह कैसे कागजात हैं डैडी?
बेटे! हमसे तुम्हारी उदासी देखी नहीं गई। इसीलिए मैंने तुम्हारे पाकिस्तान जाने का प्रबन्ध कर दिया है। ये तुम्हारा प्लेन का टिकट, पासपोर्ट व वीसा आदि हैं। लो, सम्भालो।
क्या SSS...

...यह आप क्या कर रहे हैं? जान-बूझकर उसे पाकिस्तान भेज रहे हैं।
चिन्ता मत करो राधा! मुझे अपने राम पर पूरा भरोसा है। फिर कुछ दिनों की ही तो बात है। फिर राम को मैंने इस लायक तो बना ही दिया है कि वह अपनी सुरक्षा अपने-आप कर सके। अब तुम भी मान जाओ और उसे जाने की आज्ञा दे दो।

राम तुरन्त प्रसन्नता से अपने पिता के गले से लटक गया।
ओह, यू आर ग्रेट डैडी! आप कितने अच्छे हैं! मम्मी-डैडी जिन्दाबाद!
अरे, यह क्या कर रहे हो? हटो, मुझे मस्का लगाने की कोई जरूरत नहीं...

...सुनो, तुम्हें कल सवेरे जाने वाले प्लेन से पाकिस्तान रवाना होना है। अतः अपने सफर की तैयारी कर लेना।
ओ. के. डैडी!
हुंह!
और कर्नल राघव वहां से चले गये।

कर्नल राघव के जाने के बाद—
राम, क्या तुम वहां जाने का विचार त्याग नहीं सकते? न जाने मेरा दिल क्यों घबरा-सा रहा है।
ओह मम्मी! तुम बिल्कुल चिंता न करो। मुझे कुछ नहीं होगा। फिर मैं दो सप्ताह के भीतर तो लौट आऊंगा। मेरी अच्छी मम्मी, अब तुम भी मुझे मत रोको।
ठीक है। जैसा जी में आये करो।

राम प्रसन्नता से दौड़ता हुआ कमरे से बाहर निकल गया और राधादेवी उदास नेत्रों से उसे देखती रह गईं।

अगले दिन सुबह एयरपोर्ट पर—
मुझे आज्ञा दीजिए।
जाओ, लेकिन मेरी बातों को भूलना नहीं। यदि तुम्हें किसी प्रकार की कोई परेशानी हो तो जल्द वापस लौट आना। मैं दो-तीन दिन में अपनी ड्यूटी पर वापस लौट जाऊँगा। अतः घर वापस लौटकर मुझे पत्र अवश्य लिखना।

फिर राम ने अपने मम्मी-डैडी के पैर छुए और भीतर जाने वाले मार्ग से होकर रनवे पर पहुँच गया। वहाँ उसका प्लेन उड़ान भरने के लिये तैयार खड़ा था।

शीघ्र ही—

विमान के आकाश की ऊँचाइयों को छूते ही राम अपनी कमर से बँधी बैल्ट को खोलकर अपने अभिन्न मित्र रहीम से मिलने की सुखद स्मृतियों में खो गया।
पता नहीं इतने दिनों बाद रहीम मुझे पहचान भी पायेगा या नहीं। लेकिन जब पहचानेगा तो कितना खुश होगा! मेरे आने का तार पाकर वह मुझे लेने एयरपोर्ट पर अवश्य आयेगा।

कराची हवाई अड्डे पर—
लो, तुम्हारे मित्र का प्लेन आ गया रहीम!
आहा! कितना आनन्द आयेगा मिलने पर!

कुछ ही देर बाद –
अब्बा, वो रहा राम।
हां, पहले से कहीं ज्यादा स्मार्ट लग रहा है।

नीचे उतरने के पश्चात् राम ने सामने खड़ी इमारत की ओर दृष्टि दौड़ाई।
राम भइया!
वाह! उसने मुझे पहचानने में जरा भी भूल नहीं की।

और फिर जब राम क्लीयरेन्स से फारिग होकर निकट पहुंचा तो रहीम ने उसे बड़ी गर्मजोशी और प्रसन्नता से बांहों में भर लिया।
कैसे हो राम? मेरे भाई, मेरे दोस्त!
बहुत अच्छा हूं रहीम!
वाह! इतने अर्से बाद मिलने पर भी कितना प्यार है इनमें!

फिर –
राम भइया, पहचाना इन्हें? मेरे अब्बा!
वाह! क्यों नहीं पहचानूंगा...

फिर वे एयरपोर्ट की इमारत से बाहर निकल आये।

राम-रहीम पिछली सीट पर बैठ गये तो मेजर आसिफ ने ड्राइविंग सीट संभाल ली और कार स्टार्ट कर एक तरफ दौड़ा दी।

तभी मेजर आसिफ बोल उठे -
राम बेटे, आजकल तुम्हारे पिता की ड्यूटी कहां है?
बॉर्डर पर अंकल! वहां वे सिक्योरिटी फोर्स के इंचार्ज हैं। कुछ दिन की छुट्टियों पर घर आये हुए हैं, लेकिन हो सकता है, मेरे घर वापस लौटने से पहले ही वे ड्यूटी पर वापस लौट जाएं।
ओह!
फिर उसके बाद उन्होंने कोई प्रश्न नहीं किया। शायद वे कम बोलने वाले इंसानों में से थे।

अतः राम और रहीम एक-दूसरे का हालचाल पूछने और सुनने में लग गये। रहीम रास्ते में पड़ने वाली खास-खास इमारतों और स्थानों के बारे में भी राम को बीच-बीच में बताता जा रहा था।
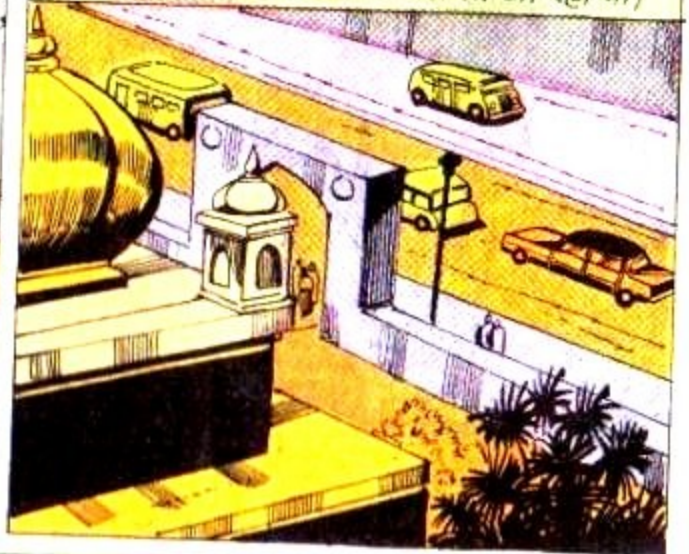
लगभग पन्द्रह-बीस मिनट तक विभिन्न सड़कों पर से गुजरने के पश्चात कार एक शानदार बंगले के अन्दर जाकर रुकी। राम-रहीम और मेजर आसिफ कार से नीचे उतर आए। तब तक कार का हॉर्न सुन कई नौकर-चाकर, रहीम की मम्मी और उसकी बहन भी उनका स्वागत करने बंगले से बाहर निकल आये थे।
रहीम, तुम राम का परिचय सबसे कराओ, तब तक मैं कुछ काम निपटा लेता हूं।
ओ.के. अब्बा!

रहीम ने राम को अपनी मम्मी और बहन का परिचय दिया -
राम, ये हैं मेरी अम्मी और मेरी आपा सलमा!
नमस्ते आंटी, नमस्ते दीदी!
नमस्ते बेटा, जुग-जुग जियो!
नमस्ते भइया! आओ, भीतर चलें। फिर बातें होंगी।
फिर सभी भीतर की ओर चल पड़े।

सभी ने राम का दिल से स्वागत किया था। उनका प्यार पाकर राम आत्मविभोर हो उठा था। तीन-चार दिन हँसते-बोलते किस तरह बीत गये, इसका राम को पता ही नहीं चला। रहीम की बहन की शादी की तैयारियां भी खूब जोर-शोर से हो रही थीं। राम पूरी तरह से रहीम एवं उसके मम्मी-डैडी के कार्यों में हाथ बंटा रहा था।

फिर वह दिन भी आ गया, जिस दिन शादी थी।
वाह! सब कुछ कितना सुन्दर लग रहा है!
हां! चलो, भीतर चलें!

भीतर एक कमरे में रहीम की बहन सलमा सुहाग के जोड़े में सजी-संवरी बैठी थी। उसकी सहेलियों ने उसे घेर रखा था।
आज का दिन मेरे लिये कितना खुशनसीब है राम!
क्यों नहीं रहीम! एक भाई के लिये बहन की शादी से बढ़कर और कौन-सा खुशनसीब दिन हो सकता है!

सहसा दूसरे कमरे से टेलीफोन की घंटी की आवाज आने लगी।
ट्रिन — ट्रिन — ट्रिन!
ओह, फोन! एक मिनट राम! तुम यहीं ठहरो, मैं जरा फोन सुन आऊं।
ठीक है!

रहीम ने टेलीफोन वाले कमरे में पहुंचकर रिसीवर उठाया।
हैलो, रहीम स्पीकिंग! आप कौन बोल रहे हैं?
मैं ब्रिगेडियर खान बोल रहा हूं बेटे! जरा अपने अब्बा को बुला दो।
जी, बहुत अच्छा!
रहीम ने रिसीवर टेबल पर रखा और अपने डैडी को बुलाने चला गया।

कुछ ही देर बाद —
हैलो!
हैलो मेजर...!

फिर दूसरी ओर से न जाने क्या कहा गया कि सुनकर मेजर आसिफ बुरी तरह चौंक उठे।
क्या ऽऽऽ?

तभी बाहर से आती बैंड-बाजों के बजने की आवाज सुनाई देने लगी।
आहा! राम, लगता है, बारात आ पहुंची है। आओ, चलकर उनका स्वागत करें।
हां, चलो!
फिर दोनों तेजी के साथ कमरे से बाहर निकल गये।

जबकि मेजर आसिफ बैंड-बाजों की आवाज और राम-रहीम के वहां से चले जाने से बेखबर खड़े फोन पर आश्चर्य-भरे स्वर में कह रहे थे—
सर, क्या मुझे अभी आना पड़ेगा?
यस। और जितनी जल्दी हो सके, हैडक्वार्टर मेरे पास पहुंचो।

मगर सर, आप तो जानते ही हैं कि आज मेरी बेटी की शादी है और बारात भी आ पहुंची है।
मेजर, आपसे जो कहा जा रहा है, पहले आप वही कीजिये। आर्डर इज आर्डर!
भयानक अंदाज में कहने साथ ही दूसरी ओर से रिसीवर रख दिया गया।

मेजर आसिफ ने भी कांपते हाथों से रिसीवर क्रेडिल पर रखा और जेब से रूमाल निकालकर चेहरे पर छलछला आये पसीने को पोंछने लगे।
उफ! न जाने इस समय ब्रिगेडियर खान के सिर पर कौन-सा भूत सवार हो गया है! जाना ही पड़ेगा।
फिर वे तेज चाल से चलते हुए बाहर की ओर लपके।

लेकिन जैसे ही वे दरवाजे पर पहुंचे—
अजी आप यहां क्या कर रहे हैं? बारात आ पहुंची है। चलकर उनका स्वागत कीजिये।
बेगम, मैं इस समय किसी जरूरी काम से बाहर जा रहा हूं। बारात का स्वागत तुम्हीं को करना होगा।

यह आप क्या कह रहे हैं? कहीं आपका दिमाग तो खराब नहीं हो गया? लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे?
मेरे पास वक्त नहीं है बेगम, मेरे ऑफिसर का फोन आया था। उन्होंने मुझे फौरन बुलाया है, और एक सैनिक का कर्तव्य है कि वह अपने ऑफिसर का हुक्म माने। चाहे उसके सामने उसका घर-बार, माँ, बहू, बेटे-बेटी सबकुछ क्यों न तबाह हो रहे हों। वह चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता

कहने के साथ ही मेजर आसिफ एक झटके के साथ आगे बढ़ गये और रहीम की मम्मी ठगी-सी अपने स्थान पर खड़ी रह गई।

बंगले से बाहर निकलकर मेजर आसिफ ने गैराज से अपनी कार निकाली और—
अरे, यह एकाएक अंकल कहां चल दिये? बारात तो आ पहुँची है!
कुछ कह नहीं सकता! वैसे अभी-अभी उनके ऑफिसर ब्रिगेडियर का फोन आया था! शायद उन्होंने ही कोई काम सौंपा हो!

उधर मेजर आसिफ ने लगभग तीन घंटे पश्चात् आर्मी हैडक्वार्टर के मुख्य द्वार पर अपनी कार रोकी।
कृपया परिचय-पत्र दिखाएं!

मेजर आसिफ ने चुपचाप जेब से अपना परिचय-पत्र निकाल कर उस सैनिक की ओर बढ़ा दिया।
थैंक्यू सर, आप भीतर आ सकते हैं!
ऐ रवाल, दरवाजा खोल दो!

और गेट के खुलते ही मेजर आसिफ फर्राटे से कार को भीतर लेते चले गये।
अब बन्द कर दो गेट!
यस सर!

कुछ ही देर बाद मेजर आसिफ एक सुन्दर व सजे-सजाए ऑफिस में ब्रिगेडियर खान के सामने खड़े थे।
बैठो मेजर!
जी!

मेजर, मैंने आपको एक जरूरी काम के सिलसिले में बुलाया है। मुझे आपकी वफादारी और ईमानदारी पर पूर्ण विश्वास है कि आप एक बहादुर सैनिक के समान अपने कर्तव्य का पालन करोगे।
निःसन्देह सर! मैं एक सैनिक हूं, और एक सैनिक अपने देश के लिए हर प्यारी से प्यारी वस्तु को भी न्योछावर कर सकता है। फरमाइये आपने मुझे किसलिये याद किया?

वैरी गुड! मुझे आपसे यही आशा थी मेजर! हमें अपने विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि भारत ने अपनी पूर्वी सीमा पर एक विशेष प्रयोगशाला बनाई है और उसमें भारत के ही कुछ योग्य वैज्ञानिक एक महत्त्वपूर्ण फार्मूले पर परीक्षण कर रहे हैं...
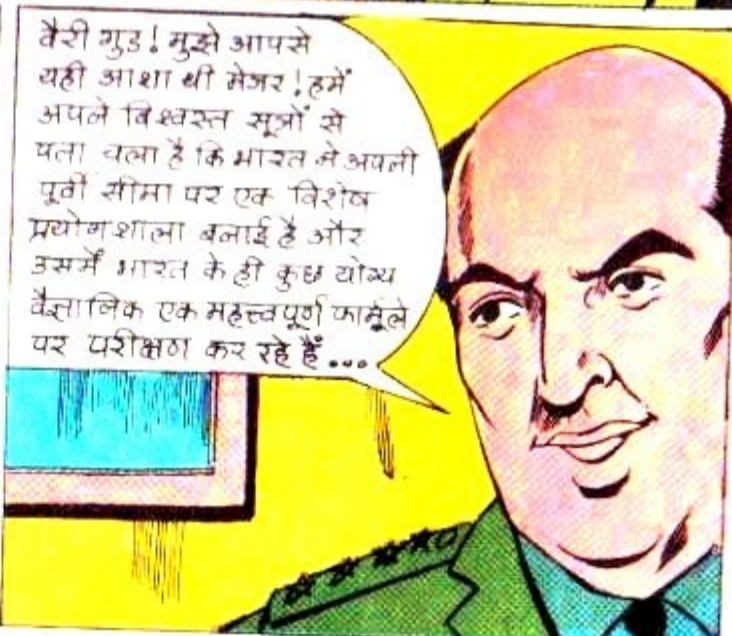
...हमें यह तो मालूम नहीं हो सका कि वह प्रयोग अथवा परीक्षण किस प्रकार का है, लेकिन गुप्त सूचना के अनुसार इतना अवश्य पता चला है कि यदि भारत का वह प्रयोग सफल हो गया तो भारत न केवल अपनी सीमा की सुरक्षा काफी मजबूत कर लेगा, बल्कि उसकी गिनती उन्नतशील देशों में गिनी जाने लगेगी...

...अतः हमारे उच्चाधिकारियों का आदेश है कि किसी प्रकार भी उस आविष्कार के बारे में मालूम करके उसे प्राप्त किया जाए अथवा प्रयोगशाला समेत उनके उस आविष्कार को तबाह कर दिया जाए...

...वैसे तो हमारे देश के चतुर एजेंट इस कार्य के लिये भारत पहुंच चुके हैं और उनकी आज की रिपोर्ट के अनुसार वे एक वैज्ञानिक के पीछे भी लग चुके हैं। वह उन वैज्ञानिकों में से एक है, जो सीमा पर बनी प्रयोगशाला में गुप्त प्रयोग करने में जुटे हुए हैं। मुझे विश्वास है कि अब जल्द ही हमें उस गुप्त प्रयोग के बारे में मालूम हो जायेगा।
ओह!

लेकिन इसके साथ ही हमारे गुप्तचरों ने आज एक महत्त्वपूर्ण सूचना और भेजी है। उस सूचना के अनुसार वह प्रयोगशाला वहाँ की सिक्योरिटी फोर्स के एक ऑफिसर इंचार्ज की देख-रेख में तैयार की गई है, और उस ऑफिसर का नाम है कर्नल राघव।
व्हाट ऽऽऽ ?

ब्रिगेडियर खान के होंठों पर तुरन्त ही एक रहस्यमय मुस्कान थिरक उठी।
आपके चौंकने का कारण मैं अच्छी तरह जानता हूं मेजर! आप और कर्नल राघव एक-दूसरे से परिचित हैं और कर्नल राघव का बेटा राम आजकल आपके यहां ही ठहरा हुआ है।

म... मगर सर! आपको इस सम्बन्ध में कैसे पता चला?
अपने एजेंटों द्वारा ही। वैसे भी आजकल हमारे देश की सीक्रेट सर्विस भारत से आने वाले हर व्यक्ति पर नजर रख रही है। खैर, अब मतलब की बात सुनिये मेजर! कर्नल राघव का यही लड़का राम हमारे इस मिशन के लिये काफी लाभदायक सिध्द हो सकता है।

मैं...मैं कुछ समझा नहीं सर!
राम को अपने कब्जे में करके हम उसके बाप कर्नल राघव को ब्लैकमेल कर सकते हैं। मुझे विश्वास है कि अपने इकलौते बेटे के मोह में वह हमारी हर शर्त और हर बात को स्वीकार करने पर विवश हो जायेगा...

लेकिन सर, यदि कर्नल राघव ने अपने बेटे के प्राणों की चिंता न करके आपकी बात मानने से इंकार कर दिया तो...?

तो...ह्हा...हा...हा...हम तोहफे के रूप में उसके बेटे की लाश उसके हवाले कर देंगे और अपने मिशन को सफल बनाने के लिये कोई दूसरी तरकीब सोचेंगे।

मेजर आसिफ को अब अपने बुलाए जाने का कारण और अपने ऑफिसर का अभिप्राय समझने में देर नहीं लगी।

उफ! राम का जीवन खतरे में है। मेरे देश के कर्णधार अब उसे अवश्य ही अपने कब्जे में करने की कोशिश करेंगे। यदि मैं मानूं तब भी और न मानूं तब भी, लेकिन क्या मुझे इनका साथ देना चाहिये? नहीं-नहीं, यह कर्नल राघव के प्रति और मेरे बेटे की दोस्ती के प्रति विश्वासघात होगा।

फिर उस मासूम राम का क्या दोष? क्या यही कि वह हम पर विश्वास करके हमारे यहाँ मेहमान के रूप में आया है। या अल्लाह! मैं क्या करूं?

आप उसकी चिन्ता मत कीजिये मेजर! बस, इतना ही कीजिये कि कल दोपहर को किसी बहाने शम को अपने घर से निकालकर यहां ले आइये। बाकी हम देख लेंगे, लेकिन ध्यान रहे, किसी को इस बात की कानोंकान भनक भी नहीं पड़नी चाहिये।

मेजर आसिफ मन-ही-मन जैसे कोई दृढ़ निश्चय कर चुके थे। ब्रिगेडियर खान की बात सुनकर वे शान्त स्वर में बोले-

ठीक है सर, मैं अपने कर्तव्य का पालन करूंगा। कल दोपहर तक शम आपके सामने होगा। फिर आप जैसा उचित समझें, वैसा ही कीजियेगा।

गुड! अब आप घर वापस जा सकते हैं। लेकिन ध्यान रहे, शम को कल दोपहर तक यहां अवश्य पहुंच जाना चाहिये। हम चाहते तो स्वयं उसे वहीं दबोच सकते थे, लेकिन दो कारणों से हमने ऐसा करना उचित नहीं समझा। एक कारण तो तुम्हारी लड़की का ब्याह है। दूसरे, हम यह नहीं चाहते कि इस बात की भनक जन-साधारण अथवा किसी भी विदेशी सरकार के कानों में पड़े।

मैं समझ रहा हूं सर!
शाबाश मेजर! वास्तव में तुम बहुत समझदार हो। बेशक यह सबकुछ करना हमारे विभाग के लिये शर्मनाक है, लेकिन देश के हित को देखते हुए इसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। ओ.के., अब कल दोपहर को ही मुलाकात होगी। विश यू गुड लक!

और जब मेजर आसिफ ब्रिगेडियर खान से विदा लेकर बाहर निकले-
ओह! काफी रात बीत गई! दिन निकलने में कुछ ही घंटे शेष हैं। घर पहुंचते-पहुंचते भोर हो जायेगी।
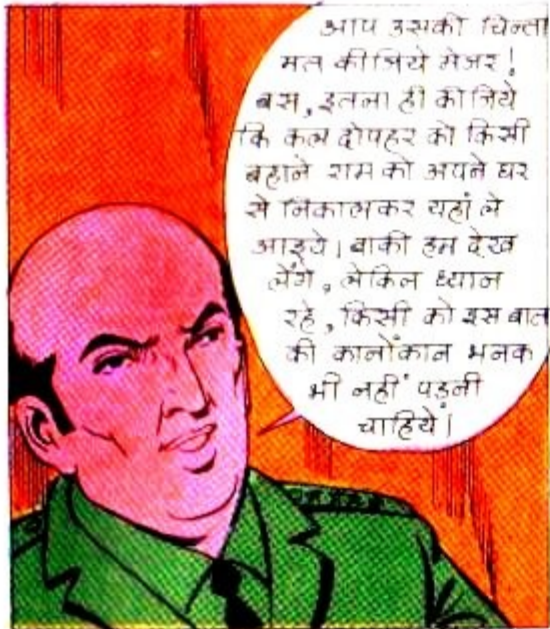
आप उसकी चिन्ता मत कीजिये मेजर! बस, इतना ही कीजिये कि कल दोपहर को किसी बहाने राम को अपने घर से निकालकर यहां ले आइये। बाकी हम देख लेंगे, लेकिन ध्यान रहे, किसी को इस बात की कानोंकान भनक भी नहीं पड़नी चाहिये।

मेजर आसिफ मन-ही-मन जैसे कोई दृढ़ निश्चय कर चुके थे। ब्रिगेडियर खान की बात सुनकर वे शान्त स्वर में बोले—
ठीक है सर, मैं अपने कर्तव्य का पालन करूंगा। कल दोपहर तक राम आपके सामने होगा। फिर आप जैसा उचित समझें, वैसा ही कीजियेगा।

गुड! अब आप घर वापस जा सकते हैं। लेकिन ध्यान रहे, राम को कल दोपहर तक यहां अवश्य पहुंच जाना चाहिये। हम चाहते तो स्वयं उसे वहीं दबोच सकते थे, लेकिन दो कारणों से हमने ऐसा करना उचित नहीं समझा। एक कारण तो तुम्हारी लड़की का ब्याह है। दूसरे, हम यह नहीं चाहते कि इस बात की भनक जन-साधारण अथवा किसी भी विदेशी सरकार के कानों में पड़े।

मैं समझ रहा हूं सर!
शाबाश मेजर! वास्तव में तुम बहुत समझदार हो। बेशक यह सबकुछ करना हमारे विभाग के लिये शर्मनाक है, लेकिन देश के हित को देखते हुए इसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। ओ. के., अब कल दोपहर को ही मुलाकात होगी। विश यू गुड लक!

और अब मेजर आसिफ ब्रिगेडियर खान से विदा लेकर बाहर निकले—
ओह! काफी रात बीत गई! दिन निकलने में कुछ ही घंटे शेष हैं। घर

इधर घर के एक कमरे में राम, रहीम और रहीम की मम्मी तीनों मौजूद थे। राम-रहीम के चेहरे उदास थे तो रहीम की मम्मी सिसक-सिसककर रो रही थीं।

कुछ देर पहले ही रहीम ने रोते हुए, दूल्हे के साथ अपनी बहन सलमा की डोली विदा की थी। सारे मेहमान भी एक-एक करके जा चुके थे। सभी को मेजर आसिफ की नामौजूदगी खली थी। डैडी के स्थान पर रहीम ने ही शादी के सारे रस्मो-रिवाज पूरे किये थे। इसके अलावा कोई चारा भी नहीं था। अब उनका बंगला बिल्कुल सूना-सूना लग रहा था, परन्तु इस समय राम-रहीम का दिमाग घर के सूनेपन की ओर नहीं, बल्कि मेजर आसिफ की ओर लगा था, जो रात के गये अभी तक नहीं लौटे थे।

बेटे, न जाने कौन-सी ऐसी बात है, जिससे मेरा दिल बैठा जा रहा है। वरना तेरे अब्बा हुजूर भला क्या बेटी के विवाह के मौके पर भी सारी रात गायब रह सकते हैं? नहीं-नहीं बेटे, जरूर कोई खास बात है।

आप नाहक ही घबरा रही हैं अम्मी! हो सकता है उन्हें कोई बहुत ही जरूरी काम पड़ गया हो!

और जैसे ही राम-रहीम और रहीम की मम्मी कमरे से बाहर निकले, उन्हें सामने से आसिफ भी आते दिखाई दिये।
कहाँ रह गये थे आप? क्या आपको बेटी की शादी की भी परवाह नहीं रही थी? न जाने किन-किन भयानक विचारों से मेरा तो कलेजा ही कांपता जा रहा था!

मेजर आसिफ के चेहरे पर परेशानी के भाव अब भी साफ जाहिर हो रहे थे, लेकिन उन्होंने टालने की गरज से कहा—
कुछ नहीं। बस, जरा जरूरी काम था। क्या सारे मेहमान चले गये?
जी हाँ अब्बा! लेकिन बात क्या है? आप कुछ परेशान से नजर आ रहे हैं!

नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है बेटे! हां, जरा तुम दोनों मेरे साथ आओ। मुझे तुमसे कुछ जरूरी बातें करनी हैं।
और तुम रहीम की अम्मी अपने कमरे में आराम करो। परेशान होने की कोई जरूरत नहीं। सब ठीक है।
कहकर मेजर दूसरे कमरे की ओर चल पड़े।

राम और रहीम भी आश्चर्य से एक-दूसरे की ओर देखते हुए उनके पीछे-पीछे चल पड़े।
तुम्हारे अब्बा जरूरत से ज्यादा परेशान लग रहे हैं रहीम!
हां राम भइया! लगता है, जरूर कोई विशेष बात हुई है। न जाने क्यों अब मेरा भी दिल कुछ घबराने लगा है।

दूसरे कमरे में पहुंचते ही मेजर आसिफ के धैर्य का बांध टूट गया और वे व्यग्र स्वर में एकदम से बोल उठे—
राम बेटे, तुम्हारी जिन्दगी इस समय खतरे में है। तुम फौरन तैयार हो जाओ। मैं तुम्हारे भारत लौटने का टिकट ले आया हूं। तुम्हारे साथ रहीम भी जायेगा। ठीक ग्यारह बजे वाले प्लेन से तुम दोनों को भारत रवाना हो जाना है।
यह आप क्या कह रहे हैं अब्बा!
अंकल!

- राम-रहीम को सकुशल भारत पहुंचने में किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?
- मेजर आसिफ अली का क्या हुआ?
- क्या ब्रिगेडियर खान प्रयोगशाला में हो रहे परीक्षण का फार्मूला प्राप्त कर सका?
- क्या पाकिस्तानी सेना ने फार्मूले सहित प्रयोगशाला को नष्ट कर दिया?
- इन सभी सवालों के विस्तारपूर्वक जवाब आपको '**हवा के बेटे**' नामक आगामी चित्रकथा में मिलेंगे।